



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 24] नई दिल्ली, शनिवार, जून 13, 1998 (ज्येष्ठ 23, 1920)
No 24] NEW DELHI, SATURDAY JUNE 13, 1998 (JYAISTHA 23, 1920)

हस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके ।
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विवरण-सूची

भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालयों द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, प्रादेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	पृष्ठ 387	भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक प्रादेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होने हैं)	पृष्ठ *
भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालयों द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	497	भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और प्रादेश	*
भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	1	भाग III—खण्ड 1—उच्च न्यायालयों, निवृत्त और महालेखा-परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार स संबंध और प्राचीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	557
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	841	भाग III—खण्ड 2—स्टैंड कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेंटों और डिजाइनों में संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस	733
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*	भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन प्रस्ताव द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	—
भाग II—खण्ड 1—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*	भाग III—खण्ड 4—विभिन्न अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	1721
भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के विल तथा रिपोर्ट	*	भाग IV—नैर-सरकारी व्यक्तियों और नैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस	117
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उप-विधियां आदि भी शामिल हैं)	*	भाग V—प्रदेशों और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के घोषणों को दर्शाने वाला अनुपकरण	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं	*		

* बाकी प्रारंभ नहीं

CONTENTS

PAGE	PAGE
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	387
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	497
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence	1
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	841
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	"
PART II—SECTION 1-A—Authoritative texts in Hindi language of Acts, Ordinances and Regulations	"
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	"
PART II—SECTION 3—Sub-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	"
PART II—SECTION 3—Sub-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	"
PART II—SECTION 3—Sub-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, Published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories)	"
PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	"
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	557
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	733
PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	"
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1721
PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies	117
PART V—Supplement showing Statistics of Birth and Deaths etc. both in English and Hindi	"

भाग I—खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय तथा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिनियमनाएँ

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 31 मई 1998

सं. 71-प्रेज/98—राष्ट्रपति, असम सरकार के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और पद

श्री बाबुल अली

तांसनायक/ब्राह्मवर

डी. ई. एफ. नानगांव

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया ।

7-1-1996 को करीब 6.10 बजे अपराह्न, जब नानगांव के पुलिस अधीक्षक, रूपाही से सरकारी ड्यूटी निभा कर वापस आ रहे थे तो पालाघानी वामनगांव में उग्रवादियों ने उनकी कार पर घात लगाकर स्वचालित हथियारों से अंधाधुंध गोलीबारी की । वाहन में बैठे सभी सातों सवारियों को गोलियां लगी । उल्का उग्रवादियों द्वारा भारी गोली-बारी करने के बावजूद, शहीद बाबुल अली ने वाहन को रास्तों में कहीं भी नहीं रुका, हानाधिक वह गोली लगने के कारण गंभीर रूप से घायल हो गए थे और घावों से खून बह रहा था । चूंकि उनका मुख्य उद्देश्य अपने पुलिस अधीक्षक और अन्य की जान की रक्षा करना था, अतः इन्होंने कार का अत्यधिक तीव्र गति से चलाया और हृदयवाचक नर्सिंग-हॉम पहुंच गए । श्री बाबुल अली ने साहस का परिचय देते हुए अपने वाहन को घात लगने के स्थान से बाहर ले आए इस प्रकार इन्होंने अपना शस्त्र और गोला बारूद उग्रवादियों द्वारा छीन लेने से बचा लिया ।

इस मुठभेड़ में, श्री बाबुल अली, तांस/नायक, ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चक्रीट की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

यह पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(1) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भस्ता भी दिनांक 7-1-96 से दिया जाएगा ।

वरुण मित्रा, राष्ट्रपति का उप सचिव

सं. 72-प्रेज/98—राष्ट्रपति, असम सरकार के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और पद

श्री भदरेश्वर रावा

(मरणोपरांत)

कांस्टेबल,

कोकराभाड़, डी. ई. एफ.

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया ।

20-10-1995 का पुलिस अधीक्षक, कोकराभाड़, को सूचना मिली कि अधुनातम हथियारों से लैस उग्रवादियों का एक ग्रुप स्यामथाईबारी गांव में डेरा डाले हुए है । वह असम पुलिस तथा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल और पंजाब पुलिस के कार्मिकों के साथ उस गांव की ओर रवाना हुए । जैसे ही वे उनके छिपने के अड्डे के निकट पहुंचे, उग्रवादियों ने अधुनातम हथियारों से अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी । पुलिस कार्मिकों ने आत्मरक्षा में जवाबी कार्रवाई की । यह मुठभेड़ करीब 30 मिनट तक चली । इस कार्रवाई में, उग्रवादियों ने पुलिस कार्मिकों पर भीषण गोलीबारी की, इस पर कांस्टेबल भदरेश्वर रावा ने उग्रवादियों पर गोलियां चलाईं लेकिन पेट में गोलियां लगने के कारण वे घायल हो गए । बाद में, अस्पताल में भावों के कारण उनकी मृत्यु हो गई ।

तलाशी के दौरान, पुलिस को एक अज्ञात बड़े युवक का शव मिला जिस पर गोलियों के घाव थे और उसके पास से मैगजीन समेत, एक एस.एल.आर., 7.62 बोर के 5 तथा 23 राउण्ड के साथ ए. के. 47 की एक मैगजीन बरामद की गई ।

इस मुठभेड़ में, (विवांगत) श्री भदरेश्वर रावा, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चक्रीट की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

यह पदक, पुलिस नियमावली के नियम 4(1) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भस्ता भी दिनांक 20-10-1995 से दिया जाएगा ।

वरुण मित्रा, राष्ट्रपति का उप सचिव

सं. 73-प्रेज/98—राष्ट्रपति, असम राष्ट्रपति के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और पद

श्री एम. बी. छेत्री,
नायब सूबेदार,
18 असम राष्ट्रपति ।

श्री ए. सी. बोरो,
राष्ट्रपति,
18 असम राष्ट्रपति ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया ।

23-9-1997 को लगभग 0850 बजे श्री एम. बी. छेत्री, गन्त दल के नेता के वाहन पर बेलबारा में उग्रवादियों ने भारी गोलीबारी की । जैसे ही गोलीबारी की आवाज शुरू हुई, श्री छेत्री अपने वाहन को छोड़कर तुरन्त घटनास्थल की तरफ भागे । स्थिति का जायजा लेने के बाद श्री छेत्री अपने गण्टी दल के साथ आगे बढ़े और बंगलादेश सीमा की तरफ भाग रहे उग्रवादियों का पीछा करना शुरू किया । एक उग्रवादी ने उनकी पीछा करने से रोकने के लिए श्री छेत्री की तरफ गोली चलायी, जिन्होंने तत्काल गोली का जवाब दिया और उस उग्रवादी को मार गिराया । इस बीच, श्री बोरो ने भागते हुए एक उग्रवादी का पीछा किया, जो उन पर गोली चला रहा था, ताकि उसे धान के खेतों में होशे हुए पड़ोसी वेश में घुसने से रोका जा सके । श्री बोरो ने, पीछा करते हुए सावधानी से निजाना साधा और पूरी तरह उग्रवादों के सामने आकर गोली चलायी और कट्टर उग्रवादी को वहीं पर मार गिराया । पीछा करना जारी रखते हुए श्री बोरो ने सीमा सुरक्षा बल के साथ संयुक्त गोलीबारी में एक अन्य उग्रवादी को मार गिराया ।

मुठभेड़ के स्थान से अभयंसी दस्तावेजों सहित भरा हुआ एक 9 एम. एम. का कारबार्डन हथियार और 29 राउन्ड के साथ दो मंगजीन तथा 2000 रुपये सहित, महत्वपूर्ण फोटोग्राफों का एक सेट बरामद हुआ ।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री एम. बी. छेत्री, नायब सूबेदार और ए. सी. बोरो, राष्ट्रपति ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चोक्ति की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(1) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23-9-1997 में दिया जाएगा ।

अरुण मिश्रा, राष्ट्रपति का उप सचिव

सं. 74-प्रेज/98—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और पद

श्री एस. के. साहू, (मरणोपरांत)
कास्टेबल,
48वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा बल ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया ।

एक मकान में कुछ उग्रवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने पर उन्हें बाहर निकालने के लिए 2/3 सितंबर, 1997 की रात्रि में 24वीं बटालियन की दो कंपनियां तैनात की गयीं । घेराबंदी के दौरान, वहां से बच निकलने के लिए विद्रोहियों में गोलीबारी शुरू कर दी । तथापि, घेराबंदी पूरी कर ली गयी और विद्रोहियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया लेकिन इसके जवाब में, उन्होंने इसके ऊपर गोलीबारी और तंज कर दी । श्री काबू, उप-महानिरीक्षक ने स्थिति का जायजा लिया तथा देखा कि गोलीबारी स्थानगृह की छिड़की से की जा रही है । इस गोलीबारी को रोकने के लिए, श्री साहू रंगते हुए उस छिड़की तक पहुंचे, अपनी राष्ट्रपति से गोली दागी तथा एक उग्रवादी को मार गिराया । इसके पहले की उन्हें कोई आह मिलती एक अन्य उग्रवादी ने उन पर गोली चला दी जिसके कारण बाद में उनकी मृत्यु हो गई । कारगर रूप से गोलीबारी करने के उद्देश्य से, सी सी आई शीट की दीवार के रूप में खड़ी एक मुख्य बाधा को दूर करने के लिए, श्री काबू ने अपनी बूलेट-प्रूफ जिप्सी को चलाते हुए उसके अंदर घुसड़ दिया । सी सी आई शीट की दीवार गिरते ही घेरा डाले हुए टुकड़ियों में जवाब में भारी गोलीबारी की जिसके फलस्वरूप घर के अंदर तीन उग्रवादी मारे गए । इस मुठभेड़ में काबू मिलकर चार उग्रवादी मारे गए । मुठभेड़ की जगह से एक यूनिवर्सल मशीन गन, 3 ए. के.-47 राइफलें, 5 ए के सीरीज की मंगजीन, 2 चीन निर्मित ग्रैनेड, एक सीरीज गोलायाकून के 100 नग तथा दो व्यक्तिगत डायरियां बरामद की गईं ।

इस मुठभेड़ में (दिवंगत) श्री एस. के. साहू, कास्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चोक्ति की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

यह पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(1) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 2-9-1997 में दिया जाएगा ।

अरुण मिश्रा, राष्ट्रपति का उप सचिव

सं. 75-प्रेज/98—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्न-लिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और पद

श्री बी. एन. काबू,
अपर-उप-महानिरीक्षक,
एस. एच. यू. सीमा सुरक्षा बल,
आई. एस. डी.-2,
श्रीनगर ।

संवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया ।

एक मकान में कुछ उग्रवादियों की मौजूबती की सूचना मिलने पर उन्हें बाहर निकालने के लिए 2/3 विनम्वर, 1997 को रात्रि में 24वीं बटालियन की दूई कंपनियां तैनात की गयी । घेराबंदी में घेराव, वहां से बच निकलने के लिए विद्रोहियों ने गोलीबारी शुरू कर दी । तथापि घेराबंदी पूरी कर ली गयी और विद्रोहियों को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया लेकिन इसके जवाब में, उन्होंने इसके ऊपर गोलीबारी और तंज कर दी । श्री काबू, उप-महानिरीक्षक ने स्थिति का आंखों से देखा तथा देखा कि गोलीबारी स्थानगृहीत बने बिड़की से की जा रही है । इस गोलीबारी का रोकने के लिए, श्री साहू रंगने हुए उस बिड़की तक पहुंचे, अपनी राइफल से गोली दागी तथा एक उग्रवादी को मार गिराया । इसके पहले की उन्हें कोई आइ मिलती एक अन्य उग्रवादी ने उन पर गोली चला दी जिसके कारण बाव में उनकी मृत्यु हो गई । कारगर रूप से गोलीबारी करने के उद्देश्य से, सी सी आई शीट की दीवार के रूप में खड़ी एक मुख्य बाधा को दूर करने के लिए, श्री काबू ने अपनी बूट प्रुफ जिप्सी को चलाते हुए उसके अंदर घुसने दिया । सी सी आई शीट की दीवार गिरते ही घेरा डाले हुए टुकड़ियों में जवाब में भारी गोलीबारी की जिसके फल-स्वरूप घर के अंदर तीन उग्रवादी मारे गए । इस मुठभेड़ में कुल मिलाकर चार उग्रवादी मारे गए । मुठभेड़ की जगह से एक यूनि-वर्सल मशीन गन, 3 ए. के.-47 राइफल्स, 5 ए के सीरीज की मशीन, 2 चीन निर्मित ग्रेनेड, ए के सीरीज मोलाबारूद के 100 नग तथा दो व्यक्तिगत डायरियां बरामद की गई ।

इस मुठभेड़ में, श्री एन. काबू, अपर उप-महानिरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकौशल की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(1) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी विनांक 2-9-1997 से दिया जाएगा ।

वरुण मिश्रा, राष्ट्रपति का उप सचिव

सं. 76-प्रेज/98—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्न-लिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और पद

श्री राकेश कुमार,
लांस नायक,
48 वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा बल ।

संवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया ।

24-3-1997 को लगभग 18.45 बजे, श्री राकेश कुमार, नायक सहित 2 एन सी आ तथा 13 जवानों के साथ सीमा सुरक्षा बल की 48 वीं बटालियन के कमांडेंट के नेतृत्व में जब एक पार्टी बन मोहल्ला, श्रीनगर क्षेत्र में गश्त लगा रही थी तो उन्होंने एक संदिग्ध व्यक्ति को देखा जिसने लगभग 200 गज की दूरी पर भागना शुरू किया । पुलिस पार्टी ने संदिग्ध व्यक्ति को धर-वृत्त करने के लिए तुरंत उसका पीछा किया लेकिन वह एक मकान में घुसने में सफल हो गया । मकान को तुरंत चारों ओर से घेर लिया गया । अपनी सुरक्षा की चिन्ता किए बिना श्री राकेश कुमार, अन्य सिपाहियों सहित तुरंत मकान में घुस गए । मकान के अंदर छिपे उग्रवादियों ने श्री कुमार की तरफ एक हथगोला फेंका तथा पिस्तौल से गोली चलाई । श्री कुमार ने तुरंत जवाबी कार्रवाई करते हुए अपनी सुरक्षा में गोली चलाई । लेकिन उग्रवादियों ने हथगोला फेंककर उन पर फिर हमला किया । विचलित हुए बिना श्री कुमार ने अपनी राइफल से फिर गोली चलाई जिसके परिणामस्वरूप उग्रवादी घटना स्थल पर ही मारा गया । मृतक उग्रवादी की पहचान नाई में हरकत-उप-अंगार के नाजिम चीफ/बीफ कमांडर मुहम्मद अब्बास खान सपूत्र मुहम्मद अकबर खान उर्फ ताहीर खान सपूत्र बड़ा (दावीना) के रूप में की गयी जोकि इस क्षेत्र का अति कट्टर/खूंखार और अत्यधिक अप्रिय उग्रवादी था । उसके कब्जे से एक पहचान पत्र, 7.65 एम एम पिस्तौल, मशीन, 7.65 एम एम राउन्ड, हथगोले, कानूबुड रिसेवर सैट, बायोमेट्रिक 47-1, सुपर स्टाई प्रोव सैट का एरियल तथा वैंड बैल्ट बरामद हुआ ।

इस मुठभेड़ में, श्री राकेश कुमार, लांस नायक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकौशल की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (1) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी विनांक 24-3-1997 से दिया जाएगा ।

वरुण मिश्रा
राष्ट्रपति का उप सचिव

सं. 77-प्रज/98—राष्ट्रपति, सीमा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों का नाम और पद

श्री आर. सी. सक्सेना,
कमांडेंट,

69 वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा बल ।

श्री राम नारायण,
हैड-कांस्टेबल,
69 वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा बल ।

श्री गुलाम मोहिद्दीन,
नायक,
69 वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा बल ।

श्री जे. एन. हेम्बूम,
लांस नायक,
69 वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा बल ।

श्री एन. एस. राय,
कांस्टेबल,
69 वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा बल ।

श्री एल. एस. नाथ,
कांस्टेबल,
69 वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा बल ।

संबाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया ।

18-2-1997 को, सीमा सुरक्षा बल के कमांडेंट श्री आर. सी. सक्सेना को गाँव अवंग माटीपूरा (जम्मू-कश्मीर) में कुछ कुख्यात उग्रवादियों की एक पूर्व नियोजित बैठक के बारे में सूचना प्राप्त हुई । श्री सक्सेना ने एक आपरेशन शुरू किया । पुलिस दल को अलग-अलग दिशाओं में तीन दलों में बांटा गया । लिखित क्षेत्र की तरफ बढ़ते हुए इनमें से एक पार्टी पर भारी गोलीबारी हुई । श्री सक्सेना अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना अपनी पार्टी के साथ आगे बढ़े और उग्रवादियों को उलभाए रखा । उनका तेजी से पीछा किया जिसके परिणामस्वरूप दो कट्टर उग्रवादी पकड़े गए । तीसरी पार्टी, जो दो उग्रवादियों का पीछा करते हुए गाँव की तरफ निकल गई थी, को जलकारने पर उग्रवादियों ने इसे पार्टी पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी । उनमें से एक ने पोजीशन ले ली तथा इस पार्टी को उलभाए रखा जबकि अन्य ने बचकर भागने का प्रयास किया । श्री सक्सेना ने इन पार्टियों को पुनः मिलाए तथा सामने की ओर से स्वयं हमला किया । श्री गुलाम मोहिद्दीन, सर्व/श्री हेम्बूम और सोमनाथ

द्वारा की जा रही गोलीबारी की आड़ में बड़ी कुशलता तथा निभीकता से आगे बढ़े तथा उग्रवादी को समीप से उलभाए रखा । भीषण मूठभेड़ के पश्चात् एक उग्रवादी मर्के पर ही मारा गया इसके बाद, सर्व/श्री राम नारायण तथा एन. एस. राय, कांस्टेबल ने पहले उग्रवादी का पीछा किया जो अपनी पिस्तौल से गोलियाँ चला रहा था, सन्निकट खतरे को परवाह न करते हुए दोनों ने मिलकर उसे हथियारों सहित धर दबाया ।

एक उग्रवादी मारा गया तथा तीन गिरफ्तार किए गए । निम्नलिखित हथियार और गोलाबारूद बरामद किया गया :—

1. ए. के. 56 राइफल	3 नग
2. पिस्तौल	1 नग
3. ए. के. 56 राइफल की मीगजीन	10 नग
4. ग्रैनेड सहित लांचर	1 नग
5. राइफल ग्रैनेड	1 नग
6. हैड ग्रैनेड	1 नग
7. ग्रैनेड	4 नग
8. ए. के. 56 राइफल के राउंड	281
9. मीगजीन पिस्तौल	1 नग
10. पिस्तौल राउंड	13 नग
11. टॉलस्कोप	1 नग
12. इ एफ सी	8 नग
13. अतिरिक्त एंजना सहित बाइरलस सैट	1 नग

इस मूठभेड़ में, सर्व/श्री आर. सी. सक्सेना, कमांडेंट, राम नारायण, हैड-कांस्टेबल, गुलाम मोहिद्दीन, नायक, जे. एन. हेम्बूम, लांस नायक, एन. एस. राय, कांस्टेबल तथा एल. एस. नाथ कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्च-कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

ये पदक, पुलिस नियमावली के नियम 4(1) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फजस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी विनांक 18-2-1997 से दिया जाएगा ।

12/6/98

बरूण सिन्हा

राष्ट्रपति का उप सचिव

सं. 78-प्रज/98—राष्ट्रपति सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों का नाम और पद

श्री राजेश कुमार,
नहायक कमांडेंट,
162वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा बल ।

श्री एम. बी. सिंह,
सुबेदार,
162वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा बल ।

श्री पी. प्रमाणिक,
कांस्टेबल,
162वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा बल ।

श्री एच. एल. राय,
कांस्टेबल,
162वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा बल ।

श्री बाबूलाल राम, (मरणोपरान्त)
लांस नायक,
162वीं बटालियन,
सीमा सुरक्षा बल ।

सेवाओं का निर्वहन उनके लिए पदक प्रदान किया गया ।

14-4-1996 को करीब 0800 बजे श्री राजेश कुमार, सहायक कमांडेंट, अपने दम्पति सहित गाँव राउण्ड की ओर नदी घास और तलाशी आपरेशन के लिए रवाना हुए । उनके पास इस आशय की कुछ सूचना भी थी कि उस गाँव में विद्रोहियों के ग्रुप ने शरण ली हुई है । जब वे उस गाँव के समीप पहुँचे तो उन्होंने संतरियों के रूप में पोजीशन लिए हुए दो व्यक्तियों की मविध शक्तिविधियाँ देखीं । ललकारने पर इन संतरियों ने एक विशिष्ट घर की ओर भागने की कोशिश की । पड़ों के पीछे पोजीशन लेकर श्री एम. बी. सिंह, सुबेदार और उनके सैकेण्ड-इन-कमान ने गोलीबारी की और भागते हुए दोनों उग्रवादियों को मार गिराया तथा उनकी दो ए. के.-56 राइफलें बरामद की ।

श्री राजेश कुमार ने अपनी टुकड़ी को पुनर्गठित किया और उस घर को घेर लेने में सफल हुए जिसकी ओर वे दोनों संतरों पहुँचने की कोशिश कर रहे थे । स्वयं को घिरा हुआ पाकर विद्रोहियों ने घर के चारों ओर से धरा पाटी पर गोलियाँ चलाती शुरू कर दी । श्री पी. प्रमाणिक और 3 अन्य कर्मिकों को किरचों लगने से हतकी चोटें आईं । जिस समय दोनों ओर से गोलीबारी होने लगी थी, तो श्री कुमार, एक टीने को आड़ लेकर घर के ऊपर पहुँचने में सफल हो गए । वहाँ से बगल वाले घर की छत पर चढ़ने के बाद वह एक ऐसे उपयुक्त स्थान पर पहुँच गए जहाँ से वह विद्रोहियों पर प्रभावी गोलीबारी कर सकते थे । 2' की एम. सी. आर. को पोजीशन पर लगाकर उन्होंने एक उच्च शक्ति का दम तथा दो राइफल ग्रेनेड उस घर में दागे । जिस समय वह दम और दोनों ग्रेनेड उस घर में जाकर गिरे और फटे तो वहाँ आग लग गई । आग को देखकर कुछ विद्रोही घर से निकल कर भागने की कोशिश करने लगे । एक विद्रोही को दबकर भागने देते, श्री सिंह ने उस पर गोली चला दी और उसे मार गिराने में सफल हो गए । दूसरी ओर जहाँ श्री प्रमाणिक पोजीशन लिए हुए थे, एक विद्रोही खिड़की

से बाहर निकल कर नाले में कूब गया । इस विद्रोही को श्री प्रमाणिक ने नाले में ही मार गिराया और उससे एक ए. के. राइफल बरामद की । इस बीच, विद्रोहियों ने घर के सामने की तरफ एक हथगोला फेंका । श्री राय, जो एक पेंड के पीछे छिपे हुए थे, को दाएँ हाथ में हथगोला फटने से किरचों लगने के कारण चोटें लग गईं । एक विद्रोही जो चारों ओर गोलियाँ चलाता हुए बचकर भाग निकलने का प्रयास कर रहा था, श्री प्रमाणिक के स्वयं पायल होने के बावजूद उनकी गोली से मारा गया और उन्होंने उससे एक ए. के.-56 राइफल बरामद की । यह देखकर कि उनके सभी साथी मारे जा चुके हैं एक विद्रोही घर के अंदर से चिल्लाया कि वे आत्म-समर्पण करना चाहते हैं । श्री राजेश कुमार ने तुरन्त गोली-बारी रोकने के आदेश दिए । जैसे ही यह विद्रोही बाहर आया, उसके पीछे-पीछे एक अन्य विद्रोही भी निकलकर बाहर आया जिसने श्री कुमार पर गोली चलाई । तथापि, श्री कुमार, सुरक्षित थे और वे राइफल की साथ उस विद्रोही की गतिविधि को भण्डर एक दम नीचे भूक गए और बच गए । श्री बाबूलाल राम, जो श्री कुमार को कवर प्रदान कर रहे थे वे तुरन्त कार्रवाई करने हुए इस विद्रोही को मार गिराया ।

उपर्युक्त मठभंड में दस उखाबी मारे गए । मठभंड स्थान से दो ए. के.-56 राइफलें, एक वायरलेस सेट, एक हथगोला, गोली-बारूद के अनेक राउण्ड बरामद किए गए । तलाशी के दौरान जमीन पर पड़ा हुआ एक हथगोला अचानक फट गया और श्री बाबूलाल के शरीर पर किरचों के कारण कई घाव हो गए । उनका वहाँ से निकाला गया परन्तु अस्पताल पहुँचने से पहले ही उनकी मृत्यु हो गई ।

इस मठभंड में, सर्व/श्री राजेश कुमार, सहायक कमांडेंट, एम. बी. सिंह, सुबेदार, पी. प्रमाणिक, कांस्टेबल, एच. एल. राय, कांस्टेबल तथा दिवंगत श्री बाबूलाल राम लांस-नायक ने अवम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कार्य परायणता का परिचय दिया ।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(1) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 14-4-96 से दिया जाएगा ।

बल्लभ मित्रा
राष्ट्रपति का उप सचिव

सं. 79-प्रैज/98—राष्ट्रपति, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और पद

श्री मो. अय्यूब, (मरणोपरान्त)
कांस्टेबल,
चतुर्थ रिजर्व बटालियन,
केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

8. जून, 1997 को निरन्तर वर्षों से जबरबस्त भूखलन हुआ जिसके कारण बड़े-बड़े शिलाखंड, राज भवन, सिविकम से संतरी चौकी के गजदीक हट्स के पास गिरने लगे। कॉन्स्टेबल अय्यप्प संतरी डायटी पर तैनात थे और पहाड़ी पर स्थित राज्यपाल निवास को आने वाले प्रवेश द्वार पर पहरा दे रहे थे। उनकी ड्यूटी पूरी होने के बाद, उन्होंने गड़गड़ाहट की ध्वनि सुनी और देखा कि बड़े-बड़े शिलाखंड, संतरी चौकी के समीप हटमेंट्स के समूह की ओर नीचे गिरने आ रहे हैं। एक मकान पर एक दृष्टि गिर गया था। अन्दर संघे हुए साथियों को सतर्क करने और उन्हें इस खतरों से बचाने के लिए कॉन्स्टेबल अय्यप्प घर-घर गए। लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने के बाद, वे राहफन और भोलाबान्द को उधार के लिए संतरी चौकी की ओर दौड़े और कर्तव्यपरायणता की उच्चतम परम्परा को बनाए रखते हुए उन्होंने इस प्रयास में अपने जीवन का बलिदान दे दिया। उनके इस वीरतापूर्ण कार्य से राजभवन, संगमरमर के परिणाम में लगभग 20 लोगों की जान बची।

इस कार्रवाई में, (विदग्ध) श्री ए. अय्यप्प, कॉन्स्टेबल ने अदम्य वीरता, माहम एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(1) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 8-6-1997 से दिया जाएगा।

वरुण मिश्रा
राष्ट्रपति का उप सचिव

सं. 80-प्रज/98—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और पद

श्री मनोहर लाल, (सरणोपरान्त)

हैड-कॉन्स्टेबल,

133 बी बटालियन,

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

12/13-6-1997 के बीच की रात लगभग 23.15 बजे, पुलिस चौकी, जिसे नाशा प्रकार के अपराध के साथ मणिपुर राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध कराया गया था, पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिक तैनात थे। इस चौकी पर अचानक 40 उग्रवादियों ने हमला कर दिया। श्री मनोहर लाल, हैड-कॉन्स्टेबल, जो अपनी चारपाई पर सो रहे थे, की दोनों जांघें ए. जी. एल. गोलों से गम्भीर रूप से जखमी हो गईं। यह गोला बाधा टाईप रोक (रैरिकोड) ने अन्दर घुसा और इसके अन्दर दिस्फोटित हुआ। जखमी होने के बावजूद वे लड़कते हुए

चारपाई में नीचे उतरने, अधिकार लिए और रंगते हुए दरवाजे से बाहर आए और अपनी कारवाहन में हमलावरों की तरफ गोलियां चलायीं। उन्होंने पुलिस कार्मिकों को भी सावधान किया और उन्हें विद्रोहियों पर गोली चलाने का निर्देश दिया। गम्भीर रूप से जखमी होने और अत्यधिक खून बह जाने के बावजूद वे अपने कार्मिकों को विद्रोहियों को हिलाफ लड़ने के लिए प्रोत्साहित करते रहे और उन्होंने, स्थल 55 राउण्ड गोलियां चलायीं, जिसके परिणामस्वरूप हमला बंद हो गया और चौकी की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकी। श्री लाल को अस्पताल पहुंचाया गया लेकिन अस्थिर खून बह जाने से जख्मों के कारण उन्होंने दम तोड़ दिया।

इस प्रकार श्री मनोहर लाल ने देश की उच्च परम्पराओं को बनाए रखते हुए सर्वोच्च काम्यो की दी।

इस मूठभंड में, (विदग्ध) श्री मनोहर लाल, हैड कॉन्स्टेबल ने अदम्य वीरता, माहम एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(1) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 12-6-1997 से दिया जाएगा।

वरुण मिश्रा
राष्ट्रपति का उप-सचिव

सं. 81-प्रज/98—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और पद

श्री निर्मल राव,

निराक्षक,

19 बी बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।

श्री मनशा राम,

नायक (अब हैड-कॉन्स्टेबल)

19 बी बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

24-3-1997 को पीपल्स वार ग्रुप के 10 से 20 सदस्यों के एक ग्रुप के गांव थोसल (अंध्र प्रदेश) के एक मकान में छिपे होने के बारे में सूचना प्राप्त हुई। पुलिस स्टेशन सिव्दीपेट (ग्रामीण) के सर्किल इंस्पेक्टर ने विशेष अभियान के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को बुलाया।

19 बी बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निरीक्षक निर्मल राव के नेतृत्व में 38 कार्मिकों और सिविल पुलिस को तैनात किया गया और रात्र में उन मकानों पर छापा मारा गया

जिनमें पीपुल्स बार ग्रुप के सदस्यों के छिो होने का संदेह था। श्री राव ने वहाँ का निरीक्षण किया और अपने बल की तीन ग्रुपों में विभाजित किया। दो ग्रुपों को गांव की घेराबंदी करने का कार्य सौंपा गया। तीसरे ग्रुप, जिसका नेतृत्व श्री राव स्वयं कर रहे थे, को "छापामार ग्रुप" बनाया गया। इस छापामार ग्रुप को आगे और दो ग्रुपों में अर्धतः वायी दिशा और वायी दिशा से हमला करने वाले ग्रुप के रूप में विभाजित किया गया। "बाहिने ग्रुप" का नेतृत्व श्री मनशा राम कर रहे थे जबकि "बाए ग्रुप" का नेतृत्व स्वयं श्री राव कर रहे थे।

छापामारों का कार्य शुरू होने पर पीपुल्स बार ग्रुप के उग्रवादियों ने छापामार ग्रुपों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। पुलिस द्वारा जवाबी गोलीबारी की गयी और इस मुठभेड़ में श्री राव ने अपनी सर्विस पिस्तौल से 5 राउन्ड गोलियां चलायीं और श्री मनशा राम ने अपनी ए. के.-47 राइफल से 100 राउन्ड गोलियां चलायीं। दोनों ओर से हुई गोलीबारी में केन्द्रिय रिजर्व पुलिस बल के एक कांस्टेबल को गोली लगी। श्री मनशा राम ने अपने जख्मी साथी को वहाँ से निकालने के लिए निपुणता से कर्वरिंग फायर की। घायल कार्मिक की सुरक्षा सुनिश्चित करने के बाद, वे इस स्थान को नजदीक गए और उग्रवादियों को उलझाए रखा। जब एक नक्सलवादी द्वारा इन पर गोली चलायी गयी तो इन्होंने तुरन्त उसका जवाब गोली चला कर दिया। उग्रवादियों ने श्री राव पर भी गोलियां चलायी लीवज़ श्री राव ने नजदीक से गोली चलाकर दो और उग्रवादियों को जख्मी कर दिया। यह मुठभेड़ 1 घंटे तक चली जिसमें 4 उग्रवादी मारे गए।

मुठभेड़ स्थल से 410 मस्कट, एक 12 बोर शॉटगन, एक .303 राइफल मंगजीन, 12 बोर के सक्रिय और खाली कार्ट्रिज, बलाए गए .303 कार्ट्रिज बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में, सर्वश्री निमल राव, निरीक्षक और मनशा राम नायक ने अव्यम वीरता, साहस एवं उच्चकौशल की कठिन-परायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(1) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24-3-1997 से दिया जाएगा।

वरुण मिश्रा
राष्ट्रपति का उप सचिव

सं. 82-प्रैज/98—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

श्री हमनूजल टोप्पो, (मरणोपरान्त)
हैड-कांस्टेबल,
23वीं बटालियन,
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।

2—101 GI/98

संघाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया।

श्री टोप्पो के नेतृत्व में असम पुलिस की एक पाटी, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की डी/23 बटालियन की एक प्लाटून और द्वितीय पंजाब पुलिस कमान्डों की 2 टुकीडिया 20-10-1995 को उस क्षेत्र की घेराबंदी करने के लिए तुरन्त गांव समताईवारी (कोकराझार) गए जहाँ 50 अधुनाम हथियारों से लैस कुछ उग्रवादी गुप्त बैठक कर रहे थे। अब यह पाटी लगभग 1900 बजे गांव में पहुँची तो उग्रवादियों ने इस पर हमला कर दिया और अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। पुलिस पाटी ने भी जवाबी कार्रवाई की और लगभग 30 मिनट तक मुठभेड़ हुई जिसमें श्री टोप्पो गोली लगने से गम्भीर रूप से घायल हो गए। गोली लगने से गम्भीर रूप से घायल होने और अत्यधिक खून बह जाने के बावजूद, वह उग्रवादियों पर गोलियां चलाते रहे। श्री टोप्पो ने बाका-टाकी से घटना के बारे में अपने कम्पनी मुख्यालय को सूचित किया और क्रमिक भेजने के लिए कहा। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना श्री टोप्पो तब तक उग्रवादियों के साथ लड़ते रहे और अपनी प्लाटून के कार्मिकों को प्रभावशाली ढंग से कमान और नियंत्रण करते रहे जब तक उन्होंने घटनास्थल पर ही वम नहीं सोड़ दिया। पुलिस कार्मिकों की तरफ से की गयी प्रभावी गोलीबारी के कारण एक उग्रवादी मारा गया जबकि अन्य उग्रवादी अंधरे का लाभ उठाकर भाग निकले।

उग्रवादियों से मंगजीन सहित एक एस. एल. आर, 7.62 के 5 राउन्ड और सक्रिय गोलीधार के 23 राउन्ड के साथ एक ए. के.-47 मंगजीन बरामद किया गया।

श्री टोप्पो ने सेवा की उच्चतम परम्परा को बनाए रखते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया।

इस मुठभेड़ में, (निर्धन) श्री हमनूजल टोप्पो, हैड-कांस्टेबल ने अव्यम वीरता, साहस एवं उच्चकौशल की कठिन-परायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(1) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 20-10-1995 से दिया जाएगा।

वरुण मिश्रा
राष्ट्रपति का उप सचिव

सं. 83-प्रैज/98—राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और पद

श्री हजारी लाल,
हैड-कांस्टेबल,

14वीं बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल।

श्री अब्दुल रशीद,
लांस नायक,
14वीं बटालियन, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ।

श्री विनोद कुमार,
कांस्टेबल,
14वीं बटालियन, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ।

संवालों का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया ।

20-12-1996 को 14.15 बजे, यह सूचना प्राप्त हुई कि होशियारा से पूरा तरह लस दो उल्का उग्रवादी शांतिपुर (अरुम) के एक स्थानीय व्यापारी के घर आए हुए हैं और उन्होंने 50 लाख रुपये की सांग का हथौड़ा तथा यह चेतावनी दी है कि यदि पैसे न दिए गए तो उसके भाषण परिणाम होंगे । इस सूचना के आधार पर श्री हजारी लाल, नायक को कमान में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की 14वीं बटालियन की श्री कम्पनी की एक टुकड़ी वहां के लिए रवाना हुई ।

उक्त व्यापारी के निवास स्थान पर पहुंचने के पश्चात्, श्री हजारी लाल ने बच निकलने के सभी रास्तों को रोक दिया और तुरन्त अपने साथियों को योजनाबद्ध तरीके से तैनात करके स्वयं अब्दुल रशीद, लांस नायक तथा विनाय कुमार कांस्टेबल के साथ बड़ी निपुणता के साथ प्रवेश द्वार को आरंभ कर दिया । इस द्वार को चौकीदार ने पहले ही बाहर से ताला लगाकर बंद किया हुआ था । लेकिन बाद में उन्हें पता चला कि यह द्वार अंदर से भी बंद है । जब तक वे कुछ समझते घर के अंदर की तरफ कुछ गोलियां चलायी गईं तथा अदरवाजे से यह संकेत मिलता था कि उग्रवादी अवश्य ही उनकी प्रतीक्षा में होंगे । श्री लाल, श्री रशीद और श्री विनोद के साथ रंगते हुए लकड़ी के दरवाजे की ओर बढ़े तथा इसे तोड़कर खोल दिया । जैसे ही दरवाजा खुला अंदर से एक 36 एच. ई. ग्रेनेड फेंका गया जो हजारी लाल की छाती में लगकर फर्श पर गिर पड़ा लेकिन फटा नहीं । तीनों व्यक्ति तुरन्त पीछे की तरफ छलांग लगाकर सुरक्षित स्थान पर आ गए तथा शेष सभी ने जहां कहीं भी वे थे वही पोजीशन ले ली । श्री रशीद दरवाजे से लगभग दो गज की दूरी पर मकान के प्रवेश-द्वार के पास कीवार के साथ सट गए जबकि श्री विनोद कुमार तथा हजारी लाल ने चार दीवारी को फांद कर उसके पीछे पोजीशन सम्भाल ली । उन्होंने देखा कि गोलीबारी उनकी पोजीशन की ओर की जा रही है और इसका जवाब देने के लिए उन्हें सामने आना पड़ेगा । श्री रशीद को अंदर से हो रही गोलीबारी का जायजा लेने के लिए दोवार से थोड़ा दूर हटना पड़ा, श्री रशीद ने खुले दरवाजे से देखा कि जीने के नीचे छुपा हुआ एक उग्रवादी उस पर गोली चलाने के लिए अपना हथियार उठा उठा रहा है । उन्होंने तुरन्त गोली चला दी, उग्रवादी ने लगे ही एक डम के पीछे पोजीशन ले ली लेकिन श्री रशीद ने उस पर गोलीबारी जारी रखी और उसे मारने में सफल हो गए । टूटते हुए दरवाजे में से दोनों ओर भी गोलीबारी निरन्तर हो रही थी तथा दूसरा उग्रवादी, जिसने मकान के अंदर सामने की ओर पोजीशन ले ली थी, भी इस गोलीबारी में बलिदान ।

मुठभेड़ के स्थान से 2 रिस्ताल, 9 सक्रिय गोला-बारूद, 32 के 2 खाली खोल, 4 खाली मंगचीन तथा दो हथगोले (एच. ई. नं. 36) बरामद हुए ।

इस मुठभेड़ में, सर्वश्री हजारी लाल, हर्ड-कांस्टेबल, अब्दुल रशीद, लांस नायक तथा विनोद कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकौशल की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

ये पदक, पुलिस नियमावली के नियम 4(1) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 20-12-96 से दिया जाएगा ।

वरुण मिश्रा
राष्ट्रपति का उप सचिव

सं. 84-प्रज/98—राष्ट्रपति, गुजरात सरकार के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और पद

श्री वाई. ए. मल्ले,
हर्ड-कांस्टेबल,
स्थानीय अपराध शाखा,
जिला-खंडा ।

संवालों का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया ।

23-7-1996 को रेलवे स्टेशन से बाहर जारी हुई अहमदाबाद-आणंद यात्री गाड़ी के यात्रियों पर एक हमलाकार नामतः ए. टी. पठान ने हमला किया । वह एक-के-बाद एक यात्री को चाकू मार कर घायल करता चलाता गया और उसने दो यात्रियों को घटनास्थल पर ही मार दिया तथा उनके घायल कर दिए । पीड़ित व्यक्तियों की मदद के लिए धीरे-धीरे सुनकर, हर्ड-कांस्टेबल वाई. ए. मल्ले, जोकि पुलिस चौकी में बैठे थे, निहत्था हानि के बावजूद अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना तुरन्त दौड़ और अभ्युक्त का पीछा किया । थोड़े से संघर्ष के बाद इन्होंने अभ्युक्त को दबोच लिया और इस प्रकार इन्होंने अन्य व्यक्तियों को घायल होने से बचा लिया ।

इस मुठभेड़ में, श्री वाई. ए. मल्ले, हर्ड-कांस्टेबल, ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकौशल की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (1) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23-7-1996 से दिया जाएगा ।

वरुण मिश्रा
राष्ट्रपति का उप सचिव

सं. 85-अंज/98—राष्ट्रपति, भारत तिब्बत सीमा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और पद

श्री सुचर्चन सिंह,

निरीक्षक,

24 वीं बटालियन,

भारत-तिब्बत सीमा पुलिस ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया ।

19-7-1997 को अनन्तनाग जिले (जम्मू और कश्मीर) के गांव कोगुंड में उग्रवादी गतिविधियों के बारे में सूचना प्राप्त होने पर भारत तिब्बत सीमा पुलिस की एक पार्टी, जिसमें श्री सुचर्चन सिंह निरीक्षक सहित 19 पुलिस कर्मिक थे, द्वारा एक घेराबंदी और तलाशी अभियान चलाया गया । श्री सुचर्चन सिंह, निरीक्षक को गांव प्रान्ज और ग्वरनार के मध्य, बाहरी, घेराबंदी क्षेत्र में तैनात किया गया था । 2100 बजे के लगभग, श्री सिंह ने दो व्यक्तियों को संवेद्य परिस्थितियों में भूमते हुए देखा । सरकारने पर उग्रवादियों ने माथियों की आड़ से गोलियां चलायी । श्री सिंह ने अपनी टुकड़ी को पुनः तैनात किया और भाग निकलने के सभी रास्तों को सील कर दिया तथा उन्हें पुनः ललकारा । फंस, उग्रवादियों ने श्री सिंह पर गोलियां चलायी । श्री सिंह एक कांस्टेबल के साथ उग्रवादियों की तरफ बढ़े और एक उग्रवादी को मार गिराने में कामयाब हो गए तथा दूसरे उग्रवादी जिसके बारे में यह संदेह था कि वह जल्मी हो गया है, ने उबड़-खाबड़ भूमि में आड़ ले ली । श्री सिंह ने पूरी रात इस क्षेत्र को घेरे रखा और भागने के सभी रास्ते बंद करने के बाद, 20-7-97 को तड़के तलाशी अभियान शुरू किया । तलाशी के दौरान श्री सिंह ने दूसरे आतंकवादी को देखा और उसे ललकारा । उस उग्रवादी ने तरल श्री सिंह पर गोलियां चलायी । श्री सिंह ने भी तरल उग्रवादी गोलियां चलायी और उसे मार गिराया । मृतक उग्रवादी की शिनाख्त बाब में एच. एम. गिरांग के सदस्य श्री. माहिक और मुस्ताक अहमद लोन के रूप में की गयी ।

मठभंड के स्थान से 2 ए. के.-56 राइफलें, 3 ए. के.-56 मगजीन, ए. के.-56 की 18 मगजीन गोलियां और एक गठघाम पत्र बरामद किया गया ।

इस मठभंड में, श्री सुचर्चन सिंह, निरीक्षक ने उदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(1) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5

के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19-7-1997 से दिया जाएगा ।

वरुण मिश्रा

राष्ट्रपति का उप सचिव

सं. 86-अंज/98—राष्ट्रपति, मणिपुर सरकार के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम और पद

श्री श्रीप्राक्पम सुभाष सिंह,

(मरणोपरान्त)

जमादार,

9वीं बटालियन,

मणिपुर राइफल्स,

इम्फाल ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया ।

दिनांक 30-4-1997 को जमादार एस. सुभाष सिंह, अपनी पार्टी जिसमें तीस व्यक्ति थे, के साथ माथ से इम्फाल जा रही यात्री बसों में एस्कार्ट ड्यूटी पर थे । जब यह पार्टी मोंगजांग गांव के समीप पहुँची तो रुड़क के दोनों ओर से स्वाचालित हथियारों से गोली-बारी होने लगी । पहले दो वाहनों में सवार इस पार्टी के सदस्यों की तत्काल मृत्यु हो गई । श्री सिंह जो कि तीसरे वाहन में सवार थे, ने अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बिना गोजीमान ले ली और उग्रवादियों पर गोली-बारी की । इसे देखकर अन्य राइफलमैन भी उग्रवादियों पर गोलियां चलाने लगे । श्री सिंह उस समय तक उग्रवादियों पर गोली-बारी करते रहे जब तक कि एक घातक गोली लगने के कारण घायल हो जाने से उनकी मृत्यु हो गई । उग्रवादियों के साथ निकट से टकराई इस मठभंड में इस पार्टी ने कुछ उग्रवादियों को घायल कर दिया । जिसका संकेत उग्रवादियों को बचकर निकल भागने के रास्ते पर मिलने खून के निशानों से मिला । तथापि, घायल उग्रवादियों को अन्य उग्रवादी उठा कर ले गए ।

इस मठभंड में (दिवंगत) श्री एस. एस. सिंह, जमादार, ने उदम्य वीरता, साहस और उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (1) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 30-4-1997 से दिया जाएगा ।

वरुण मिश्रा

राष्ट्रपति का उप सचिव

राष्ट्र प्रीति उपभोक्ता मामलें मंत्रालय

सदस्य

(राष्ट्र और नागरिक पूर्ति विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 15 मई 1998

मं. 5-6/98-संश्ल—जबकि भारत सरकार ने आधुनिक औद्योगिकी के प्रारम्भिक प्रयत्नों अर्थात् बलक भंडारण पर बल देने के साथ साधनों के भंडारण और परिवहन तथा इसकी हार्डलिंग के स्वचालन पर विचार करने के लिए 21-8-97 को एक संचालन समिति का गठन किया और

2. जबकि कथित समिति ने कुछ सिफारिशों और कार्य/योजनाओं पर अपनी रिपोर्ट 18-2-96 को सरकार को प्रस्तुत की थी।

3. जबकि सरकार ने 5-3-98 को इन सिफारिशों को स्वीकार कर लिया है और इन सिफारिशों के कार्यान्वयन के लिए एक कार्यदल गठित किया है।

4. अब सरकार ने निम्नानुसार कार्यदल गठित किया है :—

अध्यक्ष

- (1) सचिव,
राष्ट्र और नागरिक पूर्ति विभाग
राष्ट्र और उपभोक्ता मामलें मंत्रालय

सदस्य

- (2) कृषि मंत्रालय का एक प्रतिनिधि
कृषि और सहकारिता विभाग
- (3) भूतल परिवहन मंत्रालय का एक प्रतिनिधि
- (4) वाणिज्य मंत्रालय का एक प्रतिनिधि
- (5) वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि
- (6) रेलवे बोर्ड का एक प्रतिनिधि

(7) योजना आयोग का एक प्रतिनिधि

(8) प्रबन्ध निदेशक,
केन्द्रीय भंडारण निगम

(9) प्रबन्ध निदेशक,
भारतीय खाद्य निगम

(10) प्रबन्ध निदेशक,
राज्य कृषि विपणन बोर्ड
पंजाब सरकार

सदस्य-सचिव

(11) संयुक्त सचिव
(प्रसादन और भंडारण)
राष्ट्र और नागरिक पूर्ति विभाग

5. यह कार्यदल आवश्यकता पड़ने पर किसी भी विषय-मामलें के विशेषज्ञ को सहयोगित/सम्पर्क कर सकता है।

6. कार्यदल को निम्नलिखित कार्य सौंपे जाते हैं :—

- (1) समग्र रूप से संचालन समिति की सिफारिशों के कार्यान्वयन के लिए निर्देश देने, निरीक्षण और समन्वय करने हेतु कदम उठाना;
- (2) संचालन समिति की सिफारिशों और वर्ष 2020 ईस्वी को ध्यान में रखते हुए देश के लिए एक अनाज हार्डलिंग नीति का प्रारूप तैयार करना; और
- (3) साधनों की वैज्ञानिक हार्डलिंग से संबंधित किसी अन्य सलाह/सिफारिश पर विचार करना।

7. कार्यदल की यह अवधि अधिसूचना जारी होने की तारीख से तीन वर्षों के लिए होगी।

बलबोर सिंह
संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 31st May 1998

No. 71-Pres/98.—The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of the Government of Assam :—

Name and Rank of the Officer

Shri Babul Ali,
Ltk/Driver
D. E. F.,
Nangaon,

Statement of services for which the decoration has been awarded :

On 7-1-1996 at about 6.10 PM, while Supdt. of Police, Nangaon, was returning from Rupahi after performing official duty, his car was ambushed at Palashani Bamungaon by the extremists who indiscriminately fired with automatic weapons at them. All the seven occupants of the vehicle were hit by bullets. Despite heavy firing by ULFA extremists, Driver Babul Ali did not stop the vehicle on the way, even though he was bleeding due to serious bullet injuries. Since his prime concern was to save the life of his SP and others, he drove the car at a breakneck speed and reached Haibor-gaon Nursing Home. Shri Babul Ali showed courage by taking his vehicle out of the ambush site and thereby prevented the ULFA militants from snatching away their arms/ammunition.

In this encounter Sh. Babul Ali L/NK displayed conspicuous gallantry courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5 with effect from 7th January, 1996.

BARUN MITRA
Dy Secy.
to the President

No. 72-Pres/98.—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of the Government of Assam :—

Name and Rank of the Officer

Shri Bhadreswar Rava (Posthumous)
Constable
Kokrajhar DEF.

Statement of services for which the decoration has been awarded :

On 20-10-1995, Supdt. of Police, Kokrajhar received information that a group of extremists armed with sophisticated weapons were camping at village Syamthaibari. He along with Assam Police and personnel of CRPF and Punjab Police rushed to the village. As they reached near the hideout, the extremists started indiscriminate firing with sophisticated weapons. Police personnel retaliated in self defence. The encounter lasted for about 30 minutes. In the process, the police personnel came under heavy firing from the extremists. Constable Bhadreswar Rava fired on the extremists. But he sustained bullet injury in his abdomen. He later succumbed to his injuries in the Hospital.

During search the police found one unidentified dead body of Bodo Youth with bullet injuries alongwith one SLR with Magazine, 5 rounds of 7.62 bore and one magazine of AK-47 with 23 rounds.

In this encounter Shri Bhadreswar Rava, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5 with effect from 20th October, 1995.

BARUN MITRA
Dy. Secy to the President.

No. 73-Pres/98.—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Assam Rifles :—

Name and Rank of the Officers

Shri M. B. Chhetri,
Naib Subedar
18 Assam Rifles
Shri A. C. Boro,
Rifleman
18 Assam Rifles

Statement of services for which the decoration has been awarded :

On 23-9-1997 at about 0850 hours Shri M. B. Chhetri, the patrol leader's vehicle came under intense fire from militants at Belchara. As soon as the noise of the firing started, Shri Chhetri rushed to the site leaving his vehicle. After assessing the situation Shri Chhetri went ahead with his patrol and chased the fleeing undergrounds towards Bangladesh border. To prevent their chase one of the militants fired towards Shri Chhetri who promptly returned the fire and killed the underground. In the meanwhile Shri Boro ran after the underground to check his entry in the neighbouring country through paddy field who was firing at Shri Boro. Shri Boro took a careful aim while running and exposing himself completely to the underground fired and killed a hard core underground instantaneously. Continuing the chase Shri Boro killed another underground in a joint firing with BSF.

A loaded 9 mm carbine weapon and two magazines with 29 rounds including incriminating documents and a set of vital photographs including Rs. 2000/- were recovered from the place of encounter.

In this encounter S/Shri M. B. Chhetri, Naib Subedar and A. C. Boro, Rifleman displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5 with effect from 23rd September, 1997.

BARUN MITRA
Dy. Secy to the President.

No. 74-Pres/98.—The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of the Border Security Force :—

Name and Rank of the Officer

Shri S. K. Sahoo (Posthumous)
Constable
48 Bn.,
Border Security Force

Statement of services for which the decoration has been awarded :

On an information about the presence of some militants in a house, two companies of 24 Bn. were deployed on the night of 2/3 Sept., 1997 to flush them out. During cordoning, insurgents started firing to escape from there. However, the cordon was completed and the insurgents were asked to surrender. Instead, they opened heavy fire on them. Shri Kabu, DIG took stock of the situation and noticed that firing was going through the window of a bathroom. To stop this firing, Shri Sahoo crawled upto the window, fired with his rifle and killed a militant. Before effective firing, Shri Kabu decided to wipe out a major obstruction in the shape of a CCI sheet wall by driving into it his bullet proof gypsy. With the collapsing of CCI sheet wall troops in the cordon replied with heavy fire which killed three militants inside the house. In all 4 militants were killed in the encounter. One Universal Machine Gun, 3 AK-47 Rifles, 5 Mag. AK Series, 2 Chinese grenades, 100 Nos. of AMMN, AK series and 2 personal diaries were seized from the scene of encounter.

In this encounter Shri S. K. Sahoo, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

3. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5 with effect from 2nd September, 1997.

BARUN MITRA
Dy Secy.
to the President

No. 75-Pres/98.—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of the Border Security Force :—

Name and Rank of the Officer

Shri B. N. Kabu
Addl. DIG.,
SHQ BSF (ISD II)
Srinagar.

Statement of services for which the decoration has been awarded :

On an information about the presence of some militants in a house, two companies of 23 Bn. were deployed on the night of 2/3 Sept., 1997 to flush them out. During cordon-

ing, insurgents started firing to escape from there. However, the cordon was completed and the insurgents were asked to surrender. Instead, they opened heavy fire on them. Shri Kabu, DiG took stock of the situation and noticed that firing was going on through window of a bathroom. To stop this firing, Shri Sahoo crawled upto the window fired with his rifle and killed a militant. Before effective firing, Shri Kabu decided to wipe out a major obstruction in the shape of a CCI sheet wall by driving into it his bullet proof gypsy. With the challenging of CCI sheet walls troops in the cordon replied with heavy fire which killed three militants inside the house. In all 4 militants were killed in the encounter. One Universal Machine Gun, 3 AK-47 rifles, 5 Mag. AK Series, 2 Chinese grenades, 100 Nos. of AMMN. AK series and 2 personal diaries were seized from the scene of encounter.

In this encounter Shri B. N. Kabu, Addl. DiG displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under rule 4 (i) of the rules governing the award of Police medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5 with effect from 2nd September, 1997.

BARUN MITRA
Dy Secy.
to the President

No. 73-Pres/98.—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of the Border Security Force :—

Name and Rank of the Officer
Shri Rakesh Kumar,
Lance Naik,
48 Bn.,
Border Security Force.

Statement of services for which the decoration has been awarded :

On 24-3-1997 at about 18.45 hrs, while party led by Comdt. 48 Bn. BSF alongwith 2 NCOs and 13 ORs including Shri Rakesh Kumar, Naik was carrying out patrolling in area Ban Mohalla Srinagar, they observed a suspect who started running at a distance of about 200 yards. The police party immediately followed by the suspected person to nab him but he managed to enter into a house. The house was immediately cordoned. Shri Rakesh Kumar followed by other constables without caring for their personal safety, immediately entered into the house. The militants hiding inside the house hurled a grenade and fired from a pistol towards Shri Kumar. Shri Kumar immediately retaliated and fired in self defence. But militants again attacked him by lobbing hand grenade. Undeterred, Shri Kumar again fired from his rifle resulting into death of a militant on the spot. The dead militant was later on identified as Mohd. Abas Khan S/o Mohd. Akbar Khan alias Tahir Khan S/o Doda (Dachina), launching Chief/Chief Comdr. of Harkat-ul-Ansar who was a hard hardcore/dreaded and most wanted militant in the area. An identity card, 7.65 mm pistol, Magazine, 7.65 mm Rds. hand grenade, Kenwood Trans Receiver set, Bayonet AK 47-1, Aerial of set super sky probe and web belt were recovered from his possession.

In this encounter Shri Rakesh Kumar, Lance Naik displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under rule 4 (i) of the rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5 with effect from 24th March, 1997.

BARUN MITRA
Dy Secy.
to the President

No. 77-Pres/98.—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned Officers of the Border Security Force :—

Name and Rank of the Officers

R. C. Saxena,
Commandant,
69 Bn., BSF.

Shri Ram Narayan,
Head Constable,
69 Bn., BSF.
Shri Gulam Mohiddin,
Naik,
69 Bn., BSF.

Shri J. N. Hembram,
Lance Naik,
69 Bn., BSF.

Shri N. S. Roy,
Constable,
69 Bn., BSF.

Shri L. S. Nath,
Constable,
69 Bn., BSF.

Statement of services for which the decoration has been awarded :

On 18-2-1997, Shri R. C. Saxena, Commandant BSF, received an information about a preplanned meeting of some dreaded militants in village Avang Matipura (J & K). Shri Saxena launched an operation. The Police party was divided into 3 groups in different directions. One of the parties came under heavy fire while approaching the target area. Shri Saxena without caring for personal safety, moved forward with his party & engaged the militants. A hot pursuit followed which resulted in apprehension of two hard core militants. The third party which had gone around the village accosted two militants who, on being challenged, opened heavy fire on the party. One of them took position and kept the party engaged while the other tried to escape. Shri Saxena re-grouped the parties and personally led the encounter from the front. Shri Gulam Mohiddin tactically and undauntedly moved forward under covering fire given by S/Shri Hembram & Som Nath and engaged the militant from close quarters. After a fierce encounter one militant was killed on the spot. Thereafter Shri Ram Narayan and N. S. Roy, Constables, chased the first militant who was firing with his pistol, undaunted by imminent danger, the duo physically overpowered him alongwith his weapons.

One militant was killed and 3 militants were apprehended. Following arms & Amns were recovered :—

1. AK 56 Rifles—3 Nos.
2. Pistol—1 No.
3. Magazines of AK 56 Rifle—10 Nos.
4. Launcher with Grenade—2 Nos.
5. Rifle Grenade—1 No.
6. Hand Grenade—1 No.
7. Grenade—4 Nos.
8. Round of AK 56 Rifle—281 Nos.
9. Magazine Pistol—1 No.
10. Rounds Pistol—13 Nos.
11. Telescope—1 No.
12. EFCs—8 Nos.
13. Wireless set with spare Antenna—1 No.

In this encounter S/Shri R. C. Saxena, Commandant, Ram Narayan, Head Constable, Gulam Mohiddin, Naik, J. N. Hembram, Lance Naik, N. S. Roy, Constable and L. S. Nath, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under rule 4 (i) of the rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5 with effect from 18th February, 1997.

BARUN MITRA
Dy. Secy.
to the President

No. 78-Pres/98.—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned Officers of the Border Security Force :—

Name and Rank of the Officers

Shri Rajesh Kumar,
Asstt. Commandant,
162 Bn., BSF.

Shri S. B. Singh,
Subedar,
162 Bn., BSF.

Shri P. Pramanik,
Constable,
162 Bn., BSF.

Shri H. N. Rai,
Constable,
162 Bn., BSF.

Shri Babulal Ram, (Posthumous)
Lance Naik,
162 Bn., BSF.

Statement of services for which the decoration has been awarded :

On 14-4-1996, at about 0800 hrs. Shri Rajesh Kumar, Asstt. Comdt. alongwith his column left for village Groundi for a routine cordon and search operation. They also had some information that a group of insurgents were taking shelter in that village. When they reached close to the village, they observed suspicious movements of two persons who positioned themselves as sentries. These sentries when challenged tried to, run towards a particular house. Taking position behind trees, Shri S. B. Singh, Subedar and his 2 I/C fired and killed the two fleeing militants and recovered two AK-56 Rifles.

Shri Rajesh Kumar re-grouped and succeeded in putting a cordon around the target house where the two sentries had been trying to reach. On seeing that they were cordoned, the insurgents opened fire from all around the house on the cordon party. Shri P. Pramanik and 3 others personnel got minor splinter injuries. While this exchange of fire was going on, Shri Kumar, took advantage of a small hillock and managed to come up to the house behind the cover of the hillock. Climbing on to the roof of the adjacent house, he managed to reach a vantage point from which he could fire effectively on the insurgents. Shri Kumar positioning the 2" MOR, managed to fire an HE bomb, two rifle grenades into the house. When the bomb and the grenades fell on the house and exploded it caught fire. Some of the insurgents seeing the fire tried to run out of the house. Shri Singh, seeing an insurgent trying to slip out of the house succeeded in shooting and killing him. On the other side where Shri Pramanik was in position, one insurgent came out through a window and jumped into the nullah. Shri Pramanik succeeded in shooting this insurgent in the nullah and recovered AK Rifle from him. Meanwhile, one of the Insurgents threw a grenade toward the front side of the house. Shri Rai who was sheltering behind a tree sustained splinter injuries on his right hand when the grenade exploded. One insurgent who was trying to escape while firing in all directions, was shot dead by Shri Pramanik despite his injuries and he recovered one AK-56 Rifle from him. Seeing that all their colleagues had

been killed, one insurgent shouted from inside that they would like to surrender. Shri Rajesh Kumar ordered for stopping the fire. As this insurgent came out, he was followed by another insurgent who fired at Shri Kumar. Shri Kumar however, was alert and managed to duck as he saw the movement of the other insurgent with his rifle. Shri Babulal Ram who was covering Shri Kumar immediately reacted and shot this insurgent dead.

The insurgents were killed in this encounter. Two AK 56 Rifles, one Wireless set, one hand grenade and several round of ammunition were recovered from the place. During the search, one hand grenade which was lying on ground suddenly exploded and Shri Babulal got several splinter injuries on his body. He was evacuated but died before his reaching the hospital.

In this encounter S/Shri Rajesh Kumar, Asstt. Comdt., S. B. Singh, Subedar, P Pramanik, Constable, H. N. Rai, Constable and Shri Babulal Ram, Lance Naik displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under rule 4 (i) of the rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5 with effect from 14th April, 1996.

BARUN MITRA
Dy Secy.
to the President

No. 79-Pres/98.—The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the undermentioned Officer of the Central Industrial Security Force :—

Name and Rank of the Officer

Shri Mohd. Ayub, (Posthumous)
Constable,
4th Res. Nb.,
Central Industrial Security Force.

Statement of services for which the decoration has been awarded :

On June 8, 1997, incessant rain triggered heavy landslide sending big boulders down the huts near the sentry post in Raj Bhawan, Sikkim. Constable Ayub deployed on sentry duty was guarding the entrance leading up the hill to the Governor's House. Just after his duty was over, he heard rumbling sound and saw big boulders coming down towards the cluster of hutments near sentry post. A tree had fallen on one of the houses. To alert those sleeping inmates, Const. Ayub rushed from door to door to save themselves against this danger. After removing the people to safety, he ran towards the sentry post to retrieve the rifle and ammunition and laid down his life in this attempt in the highest traditions of devotion to duty. His act of heroism has saved around 20 human lives in the vicinity of the Raj Bhawan, Gangtok.

In this encounter Shri Mohd. Ayub, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

3. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5 with effect from 8th June, 1997.

BARUN MITRA
Dy Secy.
to the President

No. 80-Pres/98.—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned Officer of the Central Reserve Police Force :—

Name and Rank of the Officer

Shri Manohar Lal, (Posthumous)
Head Constable,
133 BN.,
Central Reserve Police Force.

Statement of services for which the decoration has been awarded :

On the intervening night of 12/13.6.1997 at about 2315 hours, the police post manned by CRPF personnel which was provided with basha type accommodation by the State Govt. of Manipur was suddenly attacked by 40 UGs. Shri Manohar Lal, Head-Constable, who was sleeping on his cot received grievous injury on both his thighs caused by the shell of AGL which penetrated through the basha type barricade and exploded inside it. Despite his injuries, he rolled down from the cot, took possession of weapons and crawled out of the door and fired with his carbine toward the attackers. He also alerted the police personnel and directed them to fire on the insurgents. Despite his serious injuries and excessive bleeding, he continued encouraging his men to fight back against the insurgents and himself fired 55 rounds which resulted in repulsing the attack and ensured safety of the post. Shri Lal was evacuated to hospital but he succumbed to his injuries due to profuse bleeding.

Shri Manohar Lal, thus made a supreme sacrifice in the maintenance of the best traditions of force.

In this encounter Shri Manohar Lal, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

3. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5 with effect from 12th June, 1997.

BARUN MITRA, Dy. Secy. to the President

No. 81-Pres/98.—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned Officers of the Central Reserve Police Force :—

Name and Rank of the Officer

Shri Nirmal Rao,
Inspector,
19 Bn.,
Central Reserve Police Force.

Shri Mansa Ram,
Naik (now Head Constable),
19 Bn.,
Central Reserve Police Force.

Statement of services for which the decoration has been awarded :

On 24-3-1997 an information was received about the presence of a group of 10 to 20 members of People's War Group (PWG) harbouring in one of the house of village Theegul (Andhra Pradesh). Circle Inspector of P.S. Siddipet (Rural) requisitioned CRPF for special operations.

38 personnel of 19 Bn., CRPF under the command of Inspector Nirmal Rao and civil police were deputed and subsequently raided the houses where the members of PWG were suspected to be harbouring. Shri Rao carried out the ground recon and divided his force into three groups. Two groups were assigned the task to cordon the village. The

third group, nominated as "raiding group" was led by Shri Rao. This raiding group was further sub-divided into two groups i.e. left and right assault groups. The "right group" was led by Shri Mansa Ram while the left group was led by Shri Rao.

On commencement of the raid, the PWG extremists opened indiscriminate fire on raiding groups. This was retaliated by the police and in the encounter Shri Rao fired 5 rounds with his service pistol and Shri Mansa Ram fired 100 rounds from his AK-47 rifle. In the exchange of fire a CRPF constable received bullet injury. Shri Mansa Ram, tactically gave covering fire to extricate the injured colleague. After ensuring security of the injured, he went close to the house and engaged the extremists. When he was fired upon by one of the extremists, he quickly returned the fire. The extremists also opened fire on Shri Rao, but Shri Rao returned the fire from close quarter and injured two of the extremists. The encounter lasted for an hour in which 4 extremists were killed.

On 410 musket, one 12 bore shot gun, one .303 rifle magazine, 12 bore live and empty cartridges, 303 fired cartridges were recovered from the place of encounter.

In this encounter S/Shri Nirmal Rao, Inspector and Mansa Ram, Naik displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5 with effect from 24-3-1997.

BARUN MITRA
Dy Secy.
to the President

No. 82-Pres/98.—The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the undermentioned Officer of the Central Reserve Police Force :—

Name and Rank of the Officer

Shri Emanuel Topno (Posthumous)
Head Constable,
23 Bn.,
Central Reserve Police Force.

Statement of services for which the decoration has been awarded :

A party of Assam Police, one platoon of D/23 Bn. CRPF led by Shri Topno and 2 Sections of 2nd Punjab Police Commando were rushed to village Samthaibari (Kokrajhar) on 20-10-1995 to cordon the area, where some militants armed with sophisticated weapons were holding a secret meeting. When the party reached the village at around 1900 hours, extremists attacked the party and started indiscriminate firing. The police party also retaliated and an encounter ensued for about 30 minutes in which Shri Topno sustained serious bullet injury. Despite the serious bullet injury and profuse bleeding, he continued firing upon the extremists. Shri Topno informed his Coy Hqr. about the incident through walkie-talkie and asked for re-inforcement. Without caring for his personal safety, Shri Topno continued fighting against the extremists and exercised effective command and control on his platoon personnel till he breathed his last at the spot. The effective fire from the side of police personnel led to the killing of an extremist while the other extremists fled away taking the cover of darkness.

One SLR with magazine, 5 rounds of 7.62 and one AK-47 magazine with 23 rounds of live ammunition were recovered from the extremists.

Shri Topno made a supreme sacrifice in the maintenance of the highest traditions of the service.

In this encounter Shri Emanuel Topno, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5 with effect from 20th October, 1995.

BARUN MITRA
Dy Secy.
to the President

No. 83-Pres/98.—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned Officers of the Central Reserve Police Force :—

Name and Rank of the Officer

Shri Hazari Lal,
Head Constable,
14 BN.,
Central Reserve Police Force.

Shri Abdul Rashid,
Lance Naik,
14th BN.,
Central Reserve Police Force.

Shri Vinod Kumar,
Constable,
14th BN.,
Central Reserve Police Force.

Statement of services for which the decoration has been awarded :

On 20-12-1996 at about 1415 hrs. one section of D Coy 14th Bn. CRPF commanded by Shri Hazari Lal, Naik alongwith his party rushed to the residence of one local businessman of Shantipur (Assam) in response to information that two ULFA militants fully armed had come to his house and demanded Rs. 50 lakhs and threatened him of dire consequence if not paid.

On reaching the residence of the businessman, Shri Hazari Lal strategically positioned his man quickly to cut off all possible escape routes and he himself with Abdul Rashid, L/NK and Vinod Kumar, Constable tactically advanced towards the entrance. The door was earlier locked from outside by the Chowkidar. But later on they found the door locked from inside also. By that time they knew that some shots had already been fired inside the house and locked the door indicated that militants might be waiting for them. Shri Lal alongwith Shri Rashid and Shri Vinod crawled to the wooden door and broke it open. As soon as the door was opened 36 H.E. Grenade was hurled from inside which hit Hazari Lal on his chest and fell on the floor but it did not explode. The three individuals promptly jumped back to safe position while others also took position wherever they were. Shri Rashid got close to the wall side of the house near the entrance about 2 yards away from the door while Shri Vinod Kumar and Hazari Lal crossed the boundary wall and took position behind it. They found that the firing was directed at their position and they had to expose themselves to return the firing. Shri Rashid had to come a little away from the wall to be able to see the fire inside. Shri Rashid saw through the opened door that a militant hiding under the stair case and was raising his weapon to fire at him. He immediately opened fire and the militant took position behind an iron drum but he continued to fire at him and succeeded in killing him. The firing was still continued from both sides from the broken door and the other extremist who had positioned himself in the front inside the house also got killed in the shoot-out.

Two Pistols, 9 Live Amns, 2 empty cases of .32, 4 empty magazines and 2 Nos. of hand grenade (HE No. 36) were recovered from the place of encounter.

In this encounter S/Shri Hazari Lal, Head Constable, Abdul Rashid, Lance Naik and Vinod Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5 with effect from 20th December, 1996.

BARUN MITRA
Dy Secy.
to the President

No. 84-Pres/98.—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned Officer of the Government of Gujarat :—

Name and Rank of the Officer

Shri Y. A. Malek,
Head Constable,
Local Crime Branch,
Distt. Kheda.

Statement of services for which the decoration has been awarded :

On 23-7-1996 an assailant viz. A. T. Pathan attacked passengers of Ahmedabad-Anand Passenger Train coming out of Railway Station. He went on a stabbing spree attacking one person after the another and killing two persons on the spot and injuring others in the process. On the shouts of help from the victims, Head Constable Y. A. Malek, who was sitting in the Police Chowky, though un-armed immediately rushed and chased the accused, without caring for his personal safety. After a brief struggle he managed to over-power the accused and thus prevented him from causing further damage to the people.

2. In this encounter Shri Y. A. Malek, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

3. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5 with effect from 23rd July, 1996.

BARUN MITRA
Dy Secy.
to the President

No. 85-Pres/98.—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned Officer of the Indo-Tizetan Border Police :—

Name and Rank of the Officer

Shri Sukhchain Singh,
Inspector,
24th Bn.,
ITBP.

Statement of services for which the decoration has been awarded :—

On 19-7-1997, on information about the movement of militants in Village Kogund, Distt. Anantnag, (J&K) a cordon and search operation was conducted by an ITBP party consisting of 19 police personnel including Shri Sukhchain Singh, Inspector. Shri Sukhchain Singh, Inspector was deployed in outer cordon area between village Ponzu and Guinar. At about 2100 hours, Shri Singh spotted movement of two persons under suspicious circumstances. On being challenged, the militants opened fire under the

cover of bushes. Shri Singh redeployed his troops and sealed all the escape routes and challenged them again. The trapped militants fired at Shri Singh. Shri Singh alongwith a constable moved towards the militants and was successful in killing one of the militants and the other militant was suspected to be injured had taken cover in the broken ground. Shri Singh cordoned off the area

throughout the night and started search operation on 20-7-97 at first light after sealing the exit routes. During the search Shri Singh spotted another militant and challenged him. The militant immediately opened fire at Shri Singh who reacted immediately and shot him dead. The killed militants were later identified as Mohd. Malik and Mustak Ahmed Lone, belonging to H. M. outfit.

Two AK-56 rifles, three AK-56 Magazines, 18 AK-56 Live rounds and one identity card were recovered from the place of encounter.

In this encounter Shri Sukhchain Singh, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

3. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5 with effect from 19th July, 1997.

BARUN MITRA
Dy Secy.
to the President

New Delhi, the 31 May, 1998

No. 86-Pres/98.—The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned Officer of the Government of Manipur :—

Name and Rank of the Officer

Shri Shougrakpam Subhash Singh, (Posthumous)
Jemadar,
9th Bn., Manipur Rifles,
Imphal.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On 30-4-1997, Jemadar S. Subhash Singh with his party comprising of thirty men was on escort duty of passenger buses from Mao to Imphal. When the party reached near Mongjang village, a burst of firing from automatic weapons came from both sides of the road. The members of the party travelling in first two vehicles were killed instantaneously. Shri Singh who was travelling in the third vehicle, without caring for his personal safety took position and fired at the militants. Seeing this other Riflemen also fired on the militants. Shri Singh kept on firing on the militants till he received a fatal bullet injury and succumbed to his injuries. In the close fight Shri Singh and party was able to injure few militants, which was indicated by a trail of blood on the escape route of the militants. However the injured militants were removed by the other militants.

In this encounter Shri S. S. Singh, Jemadar displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

3. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5 with effect from 30th April, 1997.

BARUN MITRA, Dy Secy, to the President

MINISTRY OF FOOD & CONSUMER AFFAIRS
(DEPARTMENT OF FOOD & CIVIL SUPPLIES)

New Delhi, the 15th May 1998

No. 5-6/98-SG.—Whereas the Government of India constituted a Steering Committee on 21-8-97 to consider the question of introduction of modern technology, i.e., automation in handling, transportation and storage of foodgrains with emphasis on bulk storage; and

2. Whereas the said Committee submitted its Report containing certain recommendations and an Action Plan on 18-2-98 to the Government; and

3. Whereas the Government has accepted the recommendations on 5-3-98 and decided to constitute a Task Force for the implementation of the recommendations.

4. Now, therefore, the Government hereby constitute the Task Force as follows :—

CHAIRMAN

- (i) Secretary,
Deptt. of Food & Civil Supplies
Ministry of Food & C. A.

MEMBER'S

- (ii) A representative from the Ministry
of Agriculture, Department of Agriculture
& Cooperation
- (iii) A representative from the
Ministry of Surface Transport
- (iv) A representative from the
Ministry of Commerce
- (v) A representative from the
Ministry of Finance
- (vi) A representative from
Railway Board
- (vii) A representative from the
Planning Commission
- (viii) Managing Director,
Central Warehousing Corporation
- (ix) Managing Director,
Food Corporation of India
- (x) Managing Director, Punjab
State Agri. Marketing Board,
Government of Punjab

MEMBER SECRETARY

- (xi) Joint Secy. (Admn. & Storage)
Deptt. of Food & Civil Supplies
Ministry of Food & C. A.

5. The Task Force may co-opt/associate any subjectmatter expert, as and when required.

6. The Task Force is entrusted the following assignment :—

- (i) To take steps to direct, oversee and co-ordinate implementation of the recommendations of the Steering Committee in an integrated manner;
- (ii) To formulate a draft Grain Handling Policy for the country keeping in view the recommendations of the Steering Committee and a vision for the year 2020 A.D.; and
- (iii) To consider any other suggestion/recommendation related to scientific handling of foodgrains.

7. The term of the Task Force will be for three years from the date of this Notification.

BALBIR SINGH
Joint Secy.